International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 34-36

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में 'नारी क्रय–विक्रय' की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन

सरोज कुमारी यादव

शोधकर्त्री, हिन्दी पीएच0डी0, सिंघानिया यूनिवर्सिटी, पचेरी बड़ी, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य की बहुचर्चित एवं बहु–सम्मानित साहित्यकार चित्रा मुद्गल जी का नाम साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति में बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। प्ररवर चेतना की संवाहिका चित्रा मुद्गल जी मानवीय भावों एवं अनुभूतियों का अपने में एक अथाह समुद्र समेटे हुए है जो उनकी जीवन की गहराईयों को समझने एवं परखने की अपूर्व क्षमता को प्रदर्शित करता है। उनका साहित्य मानवीय संवेदनाओं एवं हृदय की कोमल भावनाओं को अन्तःस्थल की गहराइयों को बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से स्पर्श करता है और नारी होने के नाते नारी जीवन की समस्याओं की बेजोड़ प्रतिक्रिया करता है। रमेश दवे जी उनके विषय में अपनी वाणी इस तरह अभिव्यक्त करते हैं, ''चित्रा के सृजन का शिल्प चट्टानी सच्चाईयों के बीच स्वेद की तरह बह–बह कर निकलता है। इसलिए वे ठण्डे स्वेद कणों का शिल्प न रचकर ऐसे कटिबंध तलाशती है जो सतत् ऊष्मावान है और जिसमें संकल्प की आँच हर समय आवॉ की तरह गरमी का अहसास कराती है लेकिन आग आक्रोश नहीं बनती।''[1]

नारी क्रय–विक्रय की समस्याएँ

नारी की खरीद–फरोख्त का धन्धा पुरातनकाल से लगभग वैध व्यवसाय के रूप में चला आ रहा है। परन्तु इस विषय में गहराई से अध्ययन करने के बाद यह निर्विवाद रूप से माना जाता है कि ''स्त्री पर यह घृणित व्यवसाय मूलतः पितृसत्तात्मक समाज द्वारा ही थोपा गया था। इस खरीद फरोख्त को समय–समय पर समाज में सरंक्षण भी मिलता रहा है।''[2]प्राचीन बेबी लोन की सभ्यता का एक अत्यंत रोचक उदाहरण मिलता है जिसके अनुसार, ''ऊर की इश्तर देवी के मन्दिर में धार्मिक स्तर पर समारोह होता था, जिसमें नगर की कुमारी युवतियाँ देश–विदेश से आए व्यापारियों–युवकों को आकर्षित करती थी। उस समय जो युवती सबसे मूल्यवान उपहार पाती थी उसी धनराशि से उसे खरीद लिया जाता था।''[3] इसी प्रकार कई जगहों पर प्रतिवर्ष विवाह योग्य कुमारियों द्वारा विवाह समारोह आयोजित किया जाता था। विवाह का आधार नीलामी द्वारा बिक कर पत्नी बनती थी। इस प्रकार नीलाम होकर जाने वाली सुन्दरियाँ कभी–कभी जीवन भर यौन मजदूरिन बनने का गौरव पाती थी। किन्तु जो भी हो, यह औरतों को क्रय–विक्रय की परम्परा तो राज्य ही नहीं धर्म द्वारा भी सम्मत थी।''[4]

भारत में प्राचीनकाल से ही नगर वधु का अस्तित्व रहा है। वे नगर वधुएँ पैसे लेकर नगर के सम्भ्रांत व सम्पन्न पुरूषों को अपना कौमार्य विक्रय करती थी। आज स्त्रियों को सेक्स वर्कर को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। जिस्मफरोशी के गोरखधन्धे में लगी औरतें ऐसे गिरोह में शामिल हो जाती है और एक रिपोर्ट के अनुसार, ''माता–पिता गरीबी के चलते अपनी बेटियों को बेच देते है।''[5]

चित्रा मुद्गल नारी समाज की एक सशक्त प्रहरी है। उन्होंने अपनी औपन्यासिक कृतयों नारी जीवन से जुड़ी समस्त प्रकार की समस्याओं से साक्षात्कार किया है और उन्हें अपने विवेकानुसार मनोवैज्ञानिक ढंग से समझ कर उनको समाज के समक्ष प्रमुखता से उठाया है और कुछ समस्याओं को गौण रूप में कहा है। नारी से ही जुड़ी उसकी क्रय–विक्रय यानि औरत की खरीद–फरोख्त की समस्याओं का बड़े ही स्वाभाविक रूप में पेश किया है।

चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास आवाँ की अनीसा के बारे में चित्रण किया है कि उसे परिस्थितियों ने बलपूर्वक इस धन्धे में आने पर बाध्य कर दिया था। उसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट से तथ्य सामने आते है–

''पोस्टमार्टम होते ही विमला बेन ने अनीसा का क्रियाकर्म करवाया। वह हिन्दू थी–नाम बदलकर 'धंधा' कर रही थी।''[6]

परन्तु जब अनीसा जैसी बेबस नारियाँ समाज की मुख्य धारा में दोबारा शामिल होना चाहती है। स्वयं को बिकने से इन्कार कर स्वाभिमान के साथ मेहनत–मजदूरी करके अपनी जिन्दगी बसर करना चाहती है तो हमारा सभ्य व शिक्षित समाज उन्हें स्वीकार करने से मना कर देता है –

''विमला बेन से शिकायत भी की थी उसमें कि मजदूर उसे देखते ही इशारेबाजी करते हैं .....अकेला पाकर कोने में खींच लेते है।''[7]

अनीसा के साथ जो हुआ वह नारी के साथ सदियों से होता आया है। परन्तु स्त्री आज तक उसके विरोध की हिम्मत नहीं जुटा पाई है। इससे पुरूष की मानसिकता को क्रूरता की हद तक जाने का दुःसाहस मिला है –

''उसी दोपहर की घटना है जिस रोज पांडेय जी अस्पताल में दाखिल हुए। किसी ग्राहक के संग अनीसा का झगड़ा हुआ। ग्राहक इच्छा के विरूद्ध जोर–जबदरस्ती उससे सम्भोग करना चाह रहा था। पेट में उसके सात महीने का बच्चा था। दारू पिए ग्राहक ने अनीसा के राजी न होने पर उसके पेट में इतनी लातें लगाई कि उसका गर्भ गिर गया और बच्चा पेट से बाहर निकल आया। अनीसा मूर्च्छित हो गई।''[8]

अत्याचार की पराकाष्ठा ने समस्त मानव जाति का सिर शर्मसार कर दिया। एक मजदूर व बेबस औरत जो कि इतनी असहाय होते है कि अपना नाम बदलकर अपना जिस्म बेचने पर मजबूर होती है, शायद वह जीने का अधिकार भी खो बैठती है।

नीलम्मा भी एक ऐसी गरीब औरत है जो कि लोगों के घरों का काम कर अपना व अपने परिवार का पालन कर रही है, उसको मंझली मालकिन उसे बिकने के लिए मजबूर करती है –

''सुनो नीलम्मा, कसम तेरे हाथों में जादू है, जादू। थोड़ा जादू और चला। दस का नोट ऊपर मिलेगा। गुर मैं बता दूंगी। बहुत आसान है, जैसा कहूँ वैसा किए जाना। जितनी तेरी अतृप्त देह सिंचेगी तेरे हाथों नीलम्मा, तुझे मैं भेंट–सोगातों से पाट दूँगी। चाँदी के नुपूर खरीद दूँगी महीने के आखिर में। तोले, दो तोले नहीं, पाव भर वजन के। अगले महीने तेरी छुंछी पड़ी नाक के लौंग।''[9]

मगर नीलम्मा का स्वाभिमान अनीसा की तरह दरकता नहीं है। वह बिकने से मना कर देती है – वह हिम्मत से कहती है –

''केवल देह बेचकर कमाना ही रंडीबाजी है। जो वह कर रही, उसे क्या नाम देंगे?''[10]

नारी को आज के पूँजीवादी, उपभोक्तावादी युग में एक बिल्कुल नई

पद्धति यानि नये सिस्टम से क्रय–विक्रय कर रहे हैं। वास्तव में यह सिस्टम जिसे मार्डन माना जाता है इसमें नये–नये ढंग से खरीद–फरोख्त को षड्यंत्र के द्वारा अंजाम दिया जाता है और दिखावा किया जाता है बेहतर सिस्टम का।

चित्रा जी नमिता के माध्यम से इस नवीन षड्यंत्रकारी पद्धति का उल्लेख करती है जिस तरीके से पूँजीपति संजय कनोई को खरीदता है। वह नमिता को तो खरीदता ही है अपितु उसके शरीर के साथ–साथ उसके शरीर से उत्पादित वस्तु को भी खरीद लेता है यानि उसकी कोख से उत्पन्न बच्चों को भी अपना नाम देता है। वह उसे खरीदने के बाद उस पर सभी प्रकार से हक जताता है। उसके शब्दों में अमानवीयता की बू आती है, ''उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात ही क्या है कि तुम्हारे ऊपर पानी की तरह पैसा बहा सके? उसका जिम्मा सिर्फ इतना था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद कर और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाएं।''[11]

अंजना वासवानी औरतों के क्रय–विक्रय करने और करवाने के मध्य एजेंट का काम करती है। नमिता को खरीद कर वह मकसद में कामयाब हो जाता है मगर दुर्भाग्य से नमिता की कोख से पैदा होने वाला बच्चा जन्म लेने से पहले ही गर्भपात के रूप में गिर जाता है। संजय अधीर एवं विचलित सा हो जाता है। वह वासवानी के बारे में कहता है, ''वह ऐसी पचासों लड़कियों को परोस सकती थी, जो मुझमें यौन–सम्बन्ध–कायम कर केवल पचहतर हजार में मुझे बाप बना सकती थी।''[12]

नामी–गिरामी उद्योगपति गौतमी की कोख को खरीद लेता है और गौतमी अपने मकसद को हासिल करने की खातिर उसे जापान में रखता है। गौतमी नगद रूपये न लेकर सेठ से विनिमय के रूप में आलीशान फ्लैट और रहने–सहने की कीमत लेती है, ''जिस फ्लैट में वह रहती है, वह जानती है किसका भेंट किया हुआ है। नामी–गिरामी उद्योगपति खेड़ा साहब का। जापान से उनकी पत्नी मुम्बई लौटी तो अपनी सूनी गोद में बेटा लेकर।''[13] प्रसिद्ध साहित्यकार मुदृला गर्ग औरत की कोख की खरीद–फरोख्त पर लिखती है, ''नमिता के कुटुनी–मार्का बहलावे–फुसलावे की तमाम पूर्वानुमय, अभिव्यंजना के बावजूद, यह तथ्य हमें झकझोर जाता है कि, वह साजिश प्रायोजित प्रेम व भौतिक सुविधाओं के प्रलोभन में, उसकी देह को नहीं, उसकी कोख को खरीदने के लिए थी।''[14]

हिन्दी साहित्य को शायद इस प्रकार की सैक्सुअल ठगी न मिली हो। मृदुला जी आगे लिखती है, ''कोख के लिए ब्याहे जाने की नियति तो हिन्दुस्तानी औरत हमेशा से झेलती आई है। पर कोख को इच्छा से उधार देने, गौतमी के सन्दर्भ या उसके लिए छल द्वारा उपयुक्त होने की अवमानना, आज के युग की देन है।''[15]

आवाँ' में गौतमी और नमिता के जरिए बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के इस सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति प्रदान की है। जब नमिता अपने विक्रय के बारे में जानती है तो वह अस्थिर सी होकर खिन्न होकर अपने को एक माल के रूप में परिवर्तित होता हुआ महसूस करती है। एक करारा सा झटका लगता है उसके हृदय को कि मैडम वासवानी ने एक मोटी दलाली कमाकर उसे संजय कनोई को बेच दिया था। नमिता बिकती रही वस्तु की तरह.....एक औरत का सौदा होता रहा। दिन–दिन, पल–पल क्रय–विक्रय का आदान होकर रह गई वह। उसे उसकी अर्न्तात्मा झकझोर देती है। उसका स्वाभिमान जाग उठता है। उसकी चेतना उसे स्वयं मूल्य त्यागने की प्रेरणा देती है। निम्न प्रतिक्रिया नमिता के स्वाभिमान को प्रकट करती हैं, ''मेज पर संजय के लिए एक कोरी चिट्ठी छोड़कर जा रही हूँ.....उनकी सौगातों के साथ।''[16]

आधुनिक चकाचौंध की दुनियाँ में शानो–शौकत के जीवन की खातिर बिना कीमत लिए स्वयं आत्मसमर्पण की मुद्रा में पुरूष की बाहों में चले जाने कोई संकोच नहीं मानती है। ऐसी मार्डन नारियों का प्रतीक है नमिता। लेकिन कई बार वह स्वयं को ठगा हुआ सा भी अनुभव करने लगती है। उसकी मनोदशा का चित्रण देखिए, ''कितनों से शारीरिक सम्पर्क हुआ.....। कभी देह को मन के साथ जोड़कर नहीं किया। सुधीर के साथ मन और देह दोनों का समागम हुआ और मगर.....।''[17] इसी 'मगर' को भी खुद नमिता ही उतरित करती हुई उल्लेख करती है, ''दैट बास्टर्ड.....उसने मुझे छला है..... .....प्रेम–व्रेम कुछ नहीं काम सम्बन्धों का भूखा भेड़िया.....आई हेट हिम..... ।''[18]

युनिसेफ के अनुसार ऐसा दृश्य सामने आता है कि दुनिया के देशों में गरीबी इस तथ्य का सबसे बड़ा सत्य है कि नारी का क्रय–विक्रय उसी अभाव की पूर्ति हेतु किया जाता है। भारत में भी माता–पिता की निर्धनता एवं कंगाली के चलते अपनी पुत्रियों को बेच देते हैं। कई ऐसे प्रान्त भी है जहाँ साठ से सत्तर प्रतिशत लड़कियों का सौदा होता है।

निर्धनता का दूसरा यह पक्ष भी सामने आता है कि अशिक्षा और रोजगार के अभाव जैसे अन्य कारण भी स्वयं विवश होकर अपनी मर्जी से कभी अपनी मर्जी के विरूद्ध इस गोरखधन्धे में आ जाती है अथवा उदरपूर्ति की खातिर माता–पिता द्वारा उनको बेच दिया जाता है। इस प्रकार का नारी का क्रय–विक्रय बाकायदा एक प्रणाली के तहत होता है जिसमें बच्चियों, लड़कियों, युवतियों व महिलाओं की खरीद–फरोख्त की जाती है। स्त्रियों को बाकायदा 'माल' यानि एक प्रोडक्ट या उत्पाद स्वरूप देश के गरीब प्रान्तों से खरीदा जाता है और फिर अन्य स्थानों पर अधिक पैसों में बेचा जाता है। इन्हें भी उनकी क्वालिटी के हिसाब से ऊँचे दामों में बेचा जाता है। लड़कियों की उम्र, सुन्दरता और आकर्षण के हिसाब से उनकी अन्य योग्यता अथवा निपुणता की तर्ज पर पैसों की उगाही की जाती है। कई बार जरूरत के अनुसार बिकने की कीमत औरत स्वयं भी निर्धारित करती है। उपन्यास गिलिगड़डु में चित्रा जी इस प्रकार के प्रकरण के रहस्य से आवरण हटाती है, ''बड़ी घटिया सी बात है मगर थी सच। मुम्बई के हफ्ते भर के प्रवास के बाद से लौटने के उपरान्त उन्हें बड़े दिनों तक इस बात का मलाल होता रहा था कि चार–दोस्तों के दबाव के बावजूद वे एक खूबसूरत असफल फिल्म अभिनेत्री के साथ तगड़ी फीस के चलते रात नहीं गुजार सके थे।''[19]

हैरत की बात यह है कि नारी के क्रय–विक्रय में आज महिलाएँ भी पूरी तरह से संलिप्त पायी जाती है। 'ब्यूटी पार्लर' की आड़ में स्वयं औरतें ही नारी की खरीद–फरोख्त का सौदा करती है। 'आवाँ' उपन्यास की निर्मला भी प्रायः कामसुख की तृप्ति हेतु काफी पैसा खर्च कर देती है। वह मर्दों की बनस्वित औरतों को सैक्स आनन्द की निपुणता में बेहतर जौहर दिखाने वाली मानती है, ''मर्दों की बनिस्वत मुझे स्त्रियाँ अधिक निपुण लगती है। गजब की चीनी लड़कियाँ हैं जो काम सन्तुष्टि के लिए हस्तकौशल से काम नहीं लेती, जीभ का उपयोग करती है। अलबता फीस तगड़ी जरूर लेती है।''[20]

चित्रा जी नारी की क्रय–विक्रय सम्बन्धी समस्याओं को विभिन्न कोणों के माध्यम से चित्रित कर हमारे समाज को सर्वाधिक दुर्भाग्यशाली मानती है। वे आधुनिक शिक्षित व विकासशील होने का दम भरने वालों सोच के ठीक विपरीत नारी तस्वीरों के स्याह यानि काले पहलु को उजागर करती है। इस मूल्यहीन कर्म का मौन समर्थन करने वालों के माध्यम से समस्त मानव जाति एवं मानवता के लिए डूब कर मरने की बात कहकर करारा व्यंग्य कसती है।

सन्दर्भ सूची

1. रमेश दवे : आवाँ, हिन्दी उपन्या समें श्रम का शिल्प और आँच का संकल्प : मधुमति जून 2000।
2. सुभाषिणी पालीवाल : भौतिक संघर्षों से जूझती नारी – पृ074।

3. सुभाषिणी पालीवाल : भौतिक संघर्षों से जूझती नारी – पृ074।
4. अमर उजाला : सम्पादकीय : लापता बच्चों की तलाश सं0 मेरठ 22 फरवरी, 2012।
5. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0354।
6. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0353।
7. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0353।
8. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0514।
9. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0516।
10. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0539।
11. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0539।
12. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0539।
13. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0540।
14. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0540।
15. चित्रा मुद्गल : आवाँ – पृ0543।
16. चित्रा मुद्गल : एक जमीन अपनी – पृ0222।
17. चित्रा मुद्गल : एक जमीन अपनी – पृ0210।
18. चित्रा मुद्गल : गिलिगड़डु – पृ041।
19. चित्रा मुद्गल : गिलिगड़डु – पृ0216।
20. सुभाषिणी पालीवला : भारत में महिला शिक्षा और साक्षरता – पृ0102।